Total No. of Printed Pages—4

**2 SEM TDC HINH (CBCS) C 4**

**2025**

( May )

HINDI

( Core )

Paper : C–4

**[ आधुनिक हिन्दी कविता (छायावाद तक) ]**

*Full Marks* : 80
*Pass Marks* : 32

*Time* : 3 hours

*The figures in the margin indicate full marks for the questions*

**1.** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×8=8

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म कहाँ हुआ था?

(ख) 'हरिऔध' उपनाम से काव्य-साधना करने वाले कवि का पूरा नाम क्या है?

(ग) 'यशोधरा' के रचयिता कौन हैं?

(घ) रामनरेश त्रिपाठी किस स्वभाव के व्यक्ति थे?

(ङ) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'आँसू' का कौन-सा संस्करण रहस्यवादी भावनाओं से युक्त कर दिया गया है?

(च) निराला ने संध्या को क्या कहा है?

(छ) किस कवि को 'प्रकृति के सुकुमार कवि' के रूप में जाना जाता है?

(ज) महादेवी वर्मा को किस रचना पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

**2.** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×4=12

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के व्यक्तित्व का सामान्य परिचय दीजिए।

(ख) 'जीवन-संदेश' कविता में कवि ने देश और जाति को क्या महत्त्व दिया?

(ग) 'ले चल मुझे भुलावा देकर' कविता में जयशंकर प्रसाद क्या कहना चाहते हैं?

(घ) महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' क्यों कहा जाता है और उनकी विरह-वेदना किसके प्रति है?

**3.** निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×4=32

(क) पढ़ि बिदेस भाषा लहत सफल बुद्धि को स्वाद।
पै कृतकृत्य न होत ये बिन कछु करि अनुवाद॥
तुलसीकृत रामायनहु पढ़त जबै चित लाय।
तब ताको आसय लिखत भाषा माँहिं बनाय॥

**अथवा**

आना प्यारे महरसुत का देखने के लिए ही।
कोसों जाती प्रतिदिन चली मंडली उत्सुकों की।
ऊँचे-ऊँचे तरु पर चढ़े गोप ढोटे अनेकों।
घंटों बैठे तृषित दृग से पंथ को देखते थे॥



( Continued )



(ख) सिद्धि-मार्ग की बाधा नारी! फिर उसकी क्या गति है?
पर उनसे पूछूँ क्या, जिनको मुझसे आज विरति है।
अर्द्ध विश्व में व्याप्त शुभाशुभ मेरी भी कुछ मति है।
मैं भी नहीं अनाथ जगत् में मेरा भी प्रभु पति है।

**अथवा**

पैदा कर जिस देश जाति ने तुमको पाला-पोसा।
किए हुए हैं वह निज हित का तुमसे बड़ा भरोसा।
उससे होना उऋण प्रथम है, सत्कर्तव्य तुम्हारा।
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा।

(ग) जिस गम्भीर मधुर छाया में—
विश्व चित्र-पट चल माया में—
विभुता विभु-सी पड़े दिखाई,
दुख-दुख वाली सत्य बनी रे।

**अथवा**

सोती थी,
जाने कहो कैसे प्रिय-आगमन वह?
नायक ने चूमे कपोल,
डाले उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल।
इस पर भी जागी नहीं,
चूक-क्षमा माँगी नहीं,
निद्रालस वंकिम विशाल नेत्र मूँदे रही—
किम्वा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिये कौन कहे?

(घ) तुम वहन कर सको जन मन में मेरे विचार,
वाणी मेरी, चाहिए, तुम्हें क्या अलंकार!
भाव कर्म आज युग की स्थितियों से है पीड़ित,
जग का रूपांतर भी जनैक्या पर अवलंबित।



( Turn Over )

अथवा

अब मंदिर में इष्ट अकेला;
इसे अजिर का शून्य गलाने को गलने दो?
चरणों से चिह्नित अलिंद की भूमि सुनहली,
प्रणत शिरों के अंक लिए चंदन की दहली;
झरे सुमन बिखरे अक्षत सित;
धूप अर्घ्य नैवेद्य अपरिमित।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 7×4=28

(क) हरिऔध जी की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'जीवन-संदेश' कविता का सारांश लिखिए।

(ग) निराला की भाषा-शैली पर एक सारगर्भित लेख लिखिए।

(घ) 'आँसू' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(ङ) "महादेवी वर्मा शून्यवाद से प्रभावित हैं।" इस कथन की समीक्षा 'यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो' कविता के आधार पर कीजिए।

(च) 'प्रथम रश्मि' कविता का भावार्थ लिखिए।

★★★